अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : नवमी- जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) ''संयम में पराक्रम करना'' यहाँ संयम के कितने पर्यायवाची शब्द हैं-
(क) 5 (ख) 6
(ग) 3 (घ) 4 (ख)

(b) तत्त्वों के ज्ञान की विचारणा कितने द्वारों से होती हैं-
(क) 14 (ख) 7
(ग) 10 (घ) 8 (क)

(c) क्षायिक सम्यक्त्व कौनसे गुणस्थान में प्राप्त होता है-
(क) 1 से 14 तक (ख) 4 से 14 तक
(ग) 4 से 7 तक (घ) 6 से 14 तक (ग)

(d) पहले गुणस्थान में क्रियाएँ पाई जाती हैं-
(क) 25 (ख) 20
(ग) 21 (घ) 24 (घ)

(e) बारहवें गुणस्थान में कितने कर्मों की सत्ता होती हैं-
(क) 7 (ख) 8
(ग) 4 (घ) 6 (क)

(f) दसवें गुणस्थान में कितने कर्मों का बन्ध होता है-
(क) 8 (ख) 6
(ग) 7 (घ) 1 (ख)

(g) ग्यारहवें गुणस्थान में कितने कर्मों की उदीरणा होती है-
(क) 7 (ख) 6
(ग) 5 (घ) 2 (ग)

(h) चौदहवें गुणस्थान में कितने कर्मों की निर्जरा होती है-
(क) 6 (ख) 8
(ग) 1 (घ) 4 (घ)

(i) सिद्ध भगवान में कितनी आत्माएँ पाई जाती हैं-
(क) 5 (ख) 6
(ग) 4 (घ) 2 (ग)

(j) पाँचवें गुणस्थान में कितनी जीवयोनियाँ पाई जाती हैं-
(क) 18 लाख (ख) 14 लाख
(ग) 26 लाख (घ) 84 लाख (क)

(k) तीसरे गुणस्थान में कितने हेतु पाये जाते हैं-
(क) 47 (ख) 43
(ग) 50 (घ) 55 (ख)

(l) छठे गुणस्थान में कितने योग पाये जाते हैं-
(क) 9 (ख) 10
(ग) 15 (घ) 14 (घ)

(m) सातवें गुणस्थान में उपयोग कितने पाये जाते हैं-
(क) 7 (ख) 9
(ग) 6 (घ) 10 (क)

(n) किस सूत्र में भगवान ने प्रश्नों के अनेकान्त दृष्टि से समाधान फरमाये हैं-
(क) आचारांग (ख) उत्तराध्ययन
(ग) भगवती (घ) दशवैकालिक (ग)

(o) दूध किसमें आता है-
(क) अशन (ख) पान
(ग) खादिम (घ) स्वादिम (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) स्वकृत कर्मों का फल परभव में मिलता है। (नहीं)
(b) ''धन से इस लोक और परलोक में रक्षण होता है'' यह मान्यता मिथ्या है। (हाँ)
(c) चूर्णि के अनुसार 'पावकम्मेहिं' का अर्थ हिंसा आदि कर्म है। (हाँ)
(d) स्थानकवासी परम्परा नैगम नय से पंच परमेष्ठी के पदों को वन्दनीय मानती है। (नहीं)
(e) ईहा द्वारा ग्रहण किये गये विषय का एकाग्रतापूर्वक निश्चय होना अवाय है। (हाँ)
(f) एक साथ पाँचों ज्ञान किसी में नही होते हैं। (हाँ)
(g) पहले गुणस्थान में जीव कृष्णपक्षी ही रहता है। (नहीं)
(h) क्षयोपशम समकित में समकित मोहनीय के उदय की नियमा होती है। (हाँ)
(i) स्याद्वाद में 'स्याद्' शब्द का अर्थ शायद होता है। (नहीं)
(j) जब क्षायिक समकित हो तथा उपशम श्रेणि करे तो पाँचों भाव होते हैं। (हाँ)
(k) इन्द्रिय और मन के माध्यम से हम वस्तु के वास्तविक सत्य तक पहुँच सकते हैं। (नहीं)
(l) अचेल, अरति व निषद्या परीषह का सम्बन्ध भय मोहनीय से अधि क है। (हाँ)
(m) पौषध में 32 दोषों का त्याग करना अनिवार्य है। (नहीं)
(n) प्रत्याख्यान निराकुलता एवं शान्ति के लिए किये जाते हैं। (हाँ)
(o) पारिट्ठावणियागारेणं यह आगार श्रावकों के लिए भी होता है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	द्वैक्रियवाद	(क) भाव निद्रा	गंगाचार्य
(b)	पंडिए	(ख) प्रतिकूल रूप	आसुपण्णे
(c)	अज्ञान	(ग) 21 भेद	भाव निद्रा
(d)	विपुलमति	(घ) चक्रवर्ती	मनःपर्याय ज्ञान
(e)	औदयिक भाव	(च) गंगाचार्य	21 भेद
(f)	अलाभ	(छ) आसुपण्णे	अन्तराय
(g)	वक्रगति	(ज) मनःपर्याय ज्ञान	कार्मण योग
(h)	अनपवर्तनीय आयु	(झ) परीषह	चक्रवर्ती
(i)	मिश्र गुणस्थान	(य) तीसरा	श्रीखण्ड
(j)	निषद्या	(य) गर्भ जन्म	परीषह
(k)	अमर गुणस्थान	(ल) उपकरण	तीसरा
(l)	उपयोग	(व) कार्मण योग	2 भेद
(m)	असमंजसं	(क्ष) 2 भेद	प्रतिकूल रूप
(n)	निर्वृति	(त्र) श्रीखण्ड	उपकरण
(o)	पोतज	(ज्ञ) अन्तराय	गर्भ जन्म

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मुझमें आते ही जीव को साधु संज्ञा प्राप्त होती है। प्रमत्त संयत गुणस्थान
(b) बाल के अग्रभाग जितना भी कोई प्रदेश ऐसा नहीं है, जहाँ मैंने जन्म-मरण नहीं किया हो। जीव
(c) मुझे मलावधंसी भी कहते हैं। संथारा
(d) मेरी प्राप्ति शीघ्र होना शक्य नहीं है। विवेक
(e) जीवन असंस्कृत है, अतः मुझे मत करो। प्रमाद
(f) मैं कारण हूँ तथा श्रुतज्ञान मेरा कार्य है। मतिज्ञान
(g) मैं उत्पत्ति क्षेत्र को छोड़ देने पर कायम नहीं रहता हूँ। अनानुगमिक
(h) मैं ज्ञान और अज्ञान का निर्णायक हूँ। सम्यग्दर्शन

(i) मैं ऐसा भाव हूँ, जो पहले से बारहवें गुणस्थान तक पाया जाता हूँ। क्षायोपशमिक
(j) हम अंगोपांग व निर्माण नामकर्म के उदय से प्राप्त होती हैं। द्रव्येन्द्रियाँ
(k) श्वेताम्बर परम्परा मुझे सम्पूर्ण शरीर व्यापी मानती है। मन
(l) मैं अनेकान्त की कथन शैली हूँ। स्याद्वाद
(m) मेरा अर्थ केवल भूखा रहना और शरीर को कष्ट पहुँचाना मात्र नहीं है। तप
(n) मेरा अर्थ प्रत्याख्यान की स्मृति न रहने से कुछ खा-पी लेना है। अनाभोगेणं
(o) मेरे अन्दर पाँचों विगयों का त्याग होता है। नीवी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) क्लिष्ट कर्म करने वाले प्राणि किसके समान निर्वेद को प्राप्त नहीं होते हैं ?

उ. राजा आदि क्षत्रियों के समान

(b) कौनसे विशुद्ध धर्म का श्रवण दुर्लभ बतलाया है ?

उ. जिसे सुनकर व्यक्ति में बारह प्रकार के तप, क्षमा आदि दश धर्म और अहिंसकता उपलक्षण से शेष व्रतों-महाव्रतों को ग्रहण करने की प्रेरणा जगती हो, वही विशुद्ध धर्म का श्रवण दुर्लभ है।

(c) प्रमाद किसे कहते हैं ?

उ. आत्म-विस्मृति, शरीर, इन्द्रियाँ, धन परिवार आदि साधनों में आसक्त होकर अपने आत्म-स्वरूप को विस्मृत कर देना तथा धर्मकार्य के प्रति अनुत्साह।

(d) 'अमइं गहाय' के दो अर्थ लिखिए।

उ. 1. अमति-कुमति के वश होकर,2 धन को अमृत समझ कर।

(e) ''केवलं बोहि बुज्झिया'' का क्या अर्थ है ?

उ. केवल का अर्थ-निर्मल-निष्कलंक है। बोधि का अर्थ-सम्यक्त्व, सम्यग्दृष्टि या सम्यक् श्रद्धा है। उस निष्कलंक बोधि को वह जीव प्राप्त कर लेता है।

(f) ''कंखे गुणे जाव सरीरभेए'' का अर्थ लिखिए।

उ. अन्तिम श्वास तक ज्ञानादि गुणों की आकांक्षा करे।

(g) सप्तभंगी के नाम लिखिए।

उ. 1 स्याद् अस्ति, 2 स्याद् नास्ति, 3 स्याद् अस्ति-नास्ति, 4 स्याद् अवक्तव्य, 5 स्याद् अस्ति अवक्तव्य, 6 स्याद् नास्ति अवक्तव्य, 7 स्याद् अस्ति-नास्ति अवक्तव्य

(h) प्रत्यक्ष प्रमाण किसे कहते हैं ?

उ. जिसमें मन और इन्द्रियों की सहायता न लेनी पड़ी, अर्थात् जो सीधे आत्मा से ही जाना जाय, उस ज्ञान को प्रत्यक्ष प्रमाण कहा गया है। अतः अवधि, मनःपर्यय व केवल ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) जीव मनुष्य भव को कैसे प्राप्त करते हैं ?

उ. अति दीर्घकाल के पश्चात् भाग्ययोग से कदाचित् कालक्रमानुसार मनुष्यगति को रोकने वाले तथा नरकगति प्राप्त करने वाले अनन्तानुबन्धी कषायादि क्लिष्ट कर्मों के नष्ट हो जाने से जीव क्लिष्टकर्मनाशरूप शुद्धि को प्राप्त करते हैं। फलतः कषाय की मन्दता, प्रकृतिभद्रता, विनीतता, सदयता और अमत्सरता आदि गुणों के कारण विशेष शुद्धि हो जाने से मनुष्यायु का बन्ध होता है और जीव मनुष्यत्व व मनुष्य-जन्म प्राप्त करते हैं।

(b) 9 निह्नवों के नाम लिखिए।

उ. 1. जमालि, 2. तिष्यगुप्त, 3. आषाढ़ाचार्य के अव्यक्तवादी शिष्य, 4. अश्वमित्र, 5. गंगाचार्य, 6. षडूलूक, 7. स्थविर, 8. गोष्ठामहिल और 9. बोटिक शिवभूति।

(c) उन दस अंगों के नाम लिखिए जो देवलोक से आने वालों को प्राप्त होते हैं ?

उ. 1. चार कामस्कन्ध, 2. मित्रवान्, 3. ज्ञातिमान्, 4. उच्चगोत्रीय, 5. वर्णवान्, 6. नीरोग, 7. महाप्राज्ञ, 8. अभिजात, 9. यशस्वी और 10. बलवान् (सामर्थ्यवान्)।

(d) 'छन्दं निरोहेण' की दो व्याख्याएँ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो मान्य

1 स्वच्छन्दता- निषेध- गुरु के अधीन अपने आग्रह से रहित होकर प्रवृत्ति करने वाला संक्लेश रहित होने से कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है।

2 छन्दसा- गुरु के अभिप्राय से आहारादि परिहाररूप निरोध करने से मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है,

3. छन्द का अर्थ वेद या आगम है, इस दृष्टि से छन्दसा-आगमविहित आज्ञानुसार, इन्द्रियादि निग्रहात्मक छन्द निरोध करने से मोक्ष प्राप्त होता है।

(e) ''न बंधवा बंधवयं उवेंति''- यह वाक्य किस भ्रान्त धारणा का निराकरण करता है ?

उ. एक व्यक्ति अगर अपने स्त्री-पुत्रादि स्वजनों के लिए कोई पापकर्म करता है तो उसका फल उन सबको भोगना पड़ता है। भगवान् ने इसका निराकरण करते हुए फरमाया कि उस कर्म के फलभोग के समय वे बान्धव सहभागी नहीं होते, उसमें हिस्सा नहीं बँटाते, स्वकृतकर्म का फल स्वयं को ही भोगना पड़ता है।

(f) प्रत्याख्यान आवश्यक की 6 प्रकार की विशुद्धियाँ लिखिए।

उ. 1. श्रद्धान विशुद्धि- पंच महाव्रत, बारह व्रत आदि रूप जो प्रत्याख्यान है, उसका श्रद्धा के साथ पालन करना।

2. ज्ञान विशुद्धि- जिनकल्प, स्थविरकल्प, मूलगुण, उत्तरगुण आदि जिस प्रत्याख्यान का जैसा स्वरूप है, उस स्वरूप को समीचीन रूप से जानना।

3. विनय विशुद्धि- मन, वचन और काया सहित प्रत्याख्यान होता है। प्रत्याख्यान में जितनी वन्दनाओं का विधान है, उतनी वन्दना अवश्य करनी।

4. अनुभाषण विशुद्धि- प्रत्याख्यान ग्रहण करते समय सद्गुरू के सम्मुख विनय मुद्रा में खड़े रहकर शुद्ध पाठ का उच्चारण करना।

5. अनुपालन विशुद्धि- भयंकर वन में या दुर्भिक्ष आदि में या रुग्ण अवस्था में व्रत का उत्साह के साथ सम्यक् प्रकार से पालन करना।

6. भाव विशुद्धि- राग-द्वेष रहित पवित्र भावना से प्रत्याख्यान का पालन करना।

(g) अनेकान्त की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

उ. अनेकान्त एक समग्र जीवन दृष्टि है। 'अनेकान्त' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'अनेक' + 'अन्त'। 'अन्त' शब्द का अर्थ यहाँ धर्म और गुण से है। 'अनेकान्त' का शाब्दिक अर्थ हुआ अनेक धर्म, अनेक गुण। किसी भी वस्तु या पदार्थ को अनेक दृष्टियों से, अनेक सन्दर्भों से, अनेक अवस्थाओं से देख-समझ कर उसमें निहित अनेक विशेषताओं को हृदयंगम करना अनेकान्त दर्शन है। एक समय में एक गुण-धर्म को मुख्यता देते हुए भी उसमें निहित अन्य गुण धर्मों का निषेध नहीं करना 'अनेकान्त' दर्शन की मौलिक विशेषता है।

(h) तत्त्वों का क्रम किस प्रकार समझना चाहिए ?

उ. सर्वप्रथम जीव तत्त्व का कथन किया है जिसका तात्पर्य है कि मोक्ष का अधिकारी जीव ही है। अजीव तत्त्व से यह बतलाया है कि जगत् में एक ऐसा भी तत्त्व है जो जड़ होने से मोक्षमार्ग के उपदेश का अधिकारी नहीं है। अथवा जीव का विरोधी अजीव तत्त्व है। जीव-अजीव के संयोग होने पर ही शुभाशुभ कर्मों का आस्रव होता है। आस्रव होने पर ही कर्मों का बन्ध होता है, अर्थात् आस्रव पूर्वक ही कर्मों का बन्ध होता है। आस्रव को रोकने का उपाय संवर तत्त्व के रूप में बतलाया है। संवर तत्त्व होने पर ही मोक्षमार्ग में सहायक तत्त्व निर्जरा का होना संभव है अथवा संवर पूर्वक ही निर्जरा होती है, इसलिये संवर के पश्चात् निर्जरा तत्त्व बतलाया है। कर्मों की आत्यन्तिक निर्जरा का सुपरिणाम मोक्ष है। मुमुक्षु साधक का चरम लक्ष्य मोक्ष है। मोक्ष प्राप्ति के बाद फिर कुछ भी पाना शेष नहीं रहता, अतः अन्तिम तत्त्व के रूप में मोक्ष तत्त्व का कथन किया गया है।

कक्षा : नवमी – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (परीक्षा 29 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) जो जीवन को संस्कृत मानते हैं, वे हैं -
(क) अप्रमत्त (ख) वीतराग
(ग) पर-प्रवादी (घ) आत्मस्थ (ग)

(b) संयम का पर्यायवाची नहीं है-
(क)लज्जा (ख) जुगुप्सा
(ग) तितिक्षा (घ) छलना (घ)

(c) काम स्कन्ध नहीं है -
(क) क्षेत्र (ख) वास्तु
(ग) पशुगण (घ) काल (घ)

(d) 'प्रमाद' का अर्थ है-
(क) आलस (ख) आत्म विस्मृति
(ग) इन्द्रिय विषय (घ) कषाय (ख)

(e) 'अप्पायंके' का अर्थ है-
(क) आत्मा (ख) निरोग
(ग) अपनापन (घ) आत्मान्वेषी (ख)

(f) 'अजया' का अर्थ है-
(क) अमर (ख) अजर
(ग) अखिलेश (घ) अजितेन्द्रिय (घ)

(g) साधक को सावधान रहना चाहिए-
(क) भारण्ड पक्षी के समान (ख) घोड़े के समान
(ग) उल्लू के समान (घ) सिंह के समान (क)

(h) 'बोधि' का अर्थ है-
(क) मति ज्ञान (ख) सम्यक्त्व
(ग) अवधिज्ञान (घ) श्रद्धा (ख)

(i) आत्मा से आत्मा की अनुभूति होना है-
(क) सम्यग्ज्ञान (ख) सम्यग्दर्शन
(ग) सम्यक् चारित्र (घ) सम्यक् तप (ख)

(j) सम्यग्दर्शन का लक्षण नहीं है-
(क) संवेग (ख) अनुकम्पा
(ग) अनाश्रव (घ) निर्वेद (ग)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) मिथ्या मान्यताएँ, भ्रांति आदि भाव निद्रा के अन्तर्गत हैं। (हाँ)
(b) निक्षेप वस्तु तत्त्व को समझने की अनुपम शैली है। (हाँ)
(c) पदार्थ का संदेह रहित ज्ञान होना 'ध्रुव' कहलाता है। (नहीं)
(d) चक्षुरिन्द्रिय और मन ये दोनों प्राप्यकारी हैं। (नहीं)
(e) खरगोश जरायुज के अन्तर्गत आता है। (नहीं)
(f) उदय समय को प्राप्त कर्म परमाणुओं के अनुभव करने का उदय कहते हैं। (हाँ)
(g) अनुभूति में आने वाला उदय प्रदेशोदय है। (नहीं)
(h) प्रत्येक पदार्थ अनन्त गुणों और विशेषताओं का पुंज है। (हाँ)
(i) खण्ड सत्य से अखण्ड सत्य के साक्षात्कार की यह प्रक्रिया अनेकान्तवाद दर्शन से ही सम्भव है। (हाँ)

(j) 'स्यात्' का अर्थ शायद, सम्भवतः कदाचित् है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मुझसे मन में चंचलता, भय, अविश्वास, चिन्ता, अहंभाव और व्याकुलता उत्पन्न होती है। धन

(b) मैं कर्मों के आने के द्वारों को बंध कर देता हूँ। संवर तत्त्व

(c) मुझमें कार्मण काय योग ही होता है। विग्रह गति

(d) मैं कर्मों का आंशिक रूप से आत्मा से अलग (पृथक) हो जाना कहलाती हूँ। निर्जरा

(e) मैं अन्तराय कर्म के उदय से होना वाला परीषह हूँ। अलाभ

(f) मैं एक समग्र जीवन दृष्टि हूँ। अनेकान्त

(g) मैं सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किया जाने वाला पौषध हूँ। अष्ट प्रहरी

(h) मेरे द्वारा अव्यक्तवाद मत प्रवर्तित हुआ। आषाढाचार्य के अव्यक्तवादी शिष्य

(i) बाल तप आदि के कारण जीव मेरी निकाय में जाता है। असुर सम्बन्धी

(j) सदयता और अमत्सरता आदि गुणों के कारण विशेष शुद्धि हो जाने से मेरा बन्ध होता है। मुनष्यायु

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) निसर्गज सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?
निसर्ग का अर्थ है- परिणाम अथवा समभाव। अर्थात् जिसमें किसी के उपदेश आदि बाह्य निमित्त की अपेक्षा न हो, उसे निसर्गज सम्यग्दर्शन कहते हैं।

(b) अवाय किसे कहते हैं ?
ईहा द्वारा ग्रहण किये गये विषय का एकाग्रतापूर्वक निश्चय होना अवाय है। जैसे कुछ समय सोचने-विचारने के बाद यह निश्चय हो जाना कि साँप का स्पर्श नहीं, रस्सी का ही है, उसे अवाय कहते हैं।

(c) द्रव्येन्द्रिय को परिभाषित कीजिए।
पुद्गलमय जड़ इन्द्रिय को द्रव्येन्द्रिय कहते हैं। द्रव्येन्द्रिय का निर्माण जाति से सम्बन्धित अंगोपांग व निर्माण नाम कर्म के उदय से होता है। इसमें आन्तरिक रूप से मति ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम सहकारी होता है।

(d) गुणस्थानों में कर्मों की सत्ता लिखिए।
पहले गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान तक आठों ही कर्मों की सत्ता है। बारहवें गुणस्थान में मोहनीय को छोड़कर शेष सात कर्मों की सत्ता है और तेरहवें तथा चौदहवें गुणस्थान में चार अघाती कर्मों की सत्ता रहती है।

(e) 13वें गुणस्थान में पाये जाने वाले दस बोल लिखिए।
1. क्षायिक समकित, 2. शुक्ल ध्यान, 3. यथाख्यात चारित्र, 4. केवलज्ञान, 5.केवल दर्शन, 6. अनंतदान लब्धि, 7. अनंतलाभ लब्धि, 8. अनंतभोग लब्धि, 9. अनंत उपभोग लब्धि, 10. अनंतवीर्य लब्धि।

(f) अनिवृत्ति बादर गुणस्थान किसे कहते हैं ?
जिस गुणस्थान में सम-समयवर्ती त्रैकालिक जीवों के परिणामों में निवृत्ति (भिन्नता) नहीं होती तथा बादर संज्वलन कषाय का उदय रहता है, उसे अनिवृत्ति बादर गुणस्थान कहते हैं।

(g) सुप्रत्याख्यान किसे कहते हैं ?
प्रत्याख्यान का स्वरूप समझकर तथा जीवादि पदार्थों को जानकर हेय पदार्थों या हिंसा, क्रोधादि कषायों का त्याग करना 'सुप्रत्याख्यान' है।

(h) अनुपालन विशुद्धि को समझाइए।

भयंकर वन में या दुर्भिक्ष आदि में या रुग्ण अवस्था में व्रत का उत्साह के साथ सम्यक् प्रकार से पालन करना अनुपालन विशुद्धि है।

(i) पच्छन्नकालेणं आगार को समझाइए।

पौरसी आदि का समय ज्ञात न होने से अथवा बादलों, आँधी, कुहरा आदि के कारण सूर्य नहीं दिखाई दे, अथवा नेत्र विकार आदि के कारण सूर्य या घड़ी आदि स्पष्ट न दिखाई दे, जिससे पौरसी पूर्ण होने के भ्रम से पार लेना।

(j) धर्म श्रवण को दुर्लभ क्यों माना गया है ?

मनुष्यगति सम्बन्धी औदारिक शरीर को पा लेने पर भी विशुद्ध (जिन-प्ररूपित) धर्म का श्रवण करना अत्यन्त दुर्लभ है। ऐसे धर्म का श्रवण तो सुलभ है, जिसके उन्नायक खाने-पीने और ऐश-आराम करने की तथा इन्द्रिय-विषयोपभोग की खुली छूट देते हों। इसलिए यहाँ कहा गया है कि जिसे सुनकर व्यक्ति में बारह प्रकार के तप, क्षमा आदि दश धर्म और अहिंसकता (उपलक्षण से शेष व्रतों-महाव्रतों)को ग्रहण करने की प्रेरणा जगती हो, वही विशुद्ध धर्म का श्रवण दुर्लभ है।

(k) अंतिम दो निह्नव के नाम तथा उनके द्वारा प्रवर्तित मत लिखिए।

निह्नव	प्रवर्तित मत
गोष्ठामाहिल	स्थिरीकरणवाद
बोटिक शिवभूति	अबद्धपोतवाद

(l) 'चरे पयाइं परिसंकमाणो' की कोई एक व्याख्या लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई एक-

1. दोषो से शंकित होता हुआ पैर (सावधानी से) रखकर चले।

2. धर्म के पदों-स्थानों (मूलगुणों)में कहीं भूल न हो जाए, ऐसी शंका करता हुआ संयममार्ग में विचरण करे।

(m) 'दीवप्पणट्ठेव' अथवा 'नेआउयं मग्गं' शब्द का अर्थ लिखिए।

दीवप्पणट्ठेव-	अंधेरी गुफा में जिसका दीपक बुझ गया हो, उसकी भाँति।
नेआउयं मग्गं-	न्याययुक्त मार्ग (अर्थात् सम्यग्दर्शनादि रत्नत्रय वाला मोक्षमार्ग)

(n) जीवत्व से क्या आशय है ?

जीवत्व का आश्य- जीवित रहना, जिस परिणाम के द्वारा जीव तीनों कालों में सदा जीवित रहता है। सिद्धावस्था में ज्ञानादि भाव परिणाम तथा संसारावस्था में आयु आदि दस प्राण जीवत्व रूप है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) प्रमाण और नय में क्या अन्तर है ?

नय वस्तु के एक अंश को ग्रहण करता है, जबकि प्रमाण अनेक अंशों को। दूसरे शब्दों में नय प्रमाण का एक अंश मात्र है और प्रमाण अनेक नयों का समूह है। नय वस्तु को एक दृष्टि से ग्रहण करता है, जबकि प्रमाण अनेक दृष्टियों से वस्तु को ग्रहण करता है।

(b) अवधिज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान में कोई तीन अन्तर लिखिए।

अथवा

आहारक शरीर की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

उ. नोट इनमें से कोई तीन- अवधिज्ञान और मनःपर्यव ज्ञान में अन्तर-

1. मनःपर्यायज्ञान अवधिज्ञान की अपेक्षा अपने विषय को बहुत विशद् रूप में, शुद्ध रूप में जानता है, इसलिये विशुद्धतर है।

2. अवधिज्ञान का क्षेत्र अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर सम्पूर्ण लोक तक है, जबकि मनःपर्यायज्ञान का क्षेत्र- ऊँचे लोक की अपेक्षा ज्योतिषी चन्द्र के उपरितल तक, नीचे लोक की अपेक्षा रत्नप्रभा नारकी के क्षुल्लक प्रतर तक तथा तिरछे लोक की अपेक्षा अढ़ाईद्वीप प्रमाण अथवा मानुषोत्तर तक ही है।

3.अवधिज्ञान के स्वामी चारों गति के जीव हो सकते हैं, जबकि मनःपर्यायज्ञान के स्वामी केवल संयत मनुष्य (साधु) ही है।

4. अवधिज्ञान का विषय कतिपय पर्याय सहित समस्त रूपी द्रव्य है, जबकि मनःपर्यायज्ञान का विषय तो केवल रूपी पदार्थों का अनन्तवाँ भाग अर्थात् मनोद्रव्य मात्र है।

अथवा

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन -आहारक शरीर की विशेषताएँ-

1. आहारक शरीर कर्मभूमि में गर्भ रूप से उत्पन्न सम्यग्दृष्टि चौदह पूर्वधारी, ऋद्धि प्राप्त साधु को होता है।

2. शुभ पुद्गलों से निर्मित होने से अत्यधिक मनोज्ञ एवं विशुद्ध होता है।

3. यह एक हाथ प्रमाण और समचौरस संस्थान वाला होता है।

4. यह न किसी को व्याघात पहुँचाता है और न किसी से बाधित होता है।

5. यह शरीर तीर्थंकर अथवा केवली भगवान से शंका का समाधान प्राप्त करने, वादी के प्रश्नों का उत्तर देने, तीर्थंकर भगवान की ऋद्धि देखने तथा जीव दया के निमित्त से प्रयोग में आता है।

6. आहारक शरीर अन्तर्मुहूर्त्त के लिए बनाया जाता है।

(c) द्वितीयोपशम के भांगे, उनके गुणस्थान व स्थिति लिखिए।

अथवा

क्षायिक समकित प्राप्ति की प्रक्रिया के भांगे, उनके गुणस्थान व स्थिति लिखिए।

उ. द्वितीयोपशम-

सातों प्रकृतियों का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति- जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

चार की विसंयोजना, तीन का उपशम- (4 से 11 गुणस्थान तक, स्थिति-जघन्य-उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

उ. क्षायिक की प्रक्रिया-

4 का क्षय, 2 का क्षयोपशम, 1 का वेदन- (गुणस्थान 4 से 7 तक, स्थिति- जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

5 का क्षय, 1 का क्षयोपशम, 1 का वेदन (गुणस्थान 4 से 7 तक, स्थिति-जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

6 का क्षय, 1 का वेदन (गुणस्थान 4 से 7 तक, स्थिति-जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त)

(d) गुणस्थानों में आत्मा द्वार लिखिए।

अथवा

गुणस्थानों में उपयोग द्वार लिखिए।

आत्मा द्वार-पहले और तीसरे गुणस्थान में ज्ञान और चारित्र आत्मा के सिवाय छह आत्माएँ पाई जाती हैं। दूसरे, चौथे और पाँचवें गुणस्थान में चारित्र आत्मा के सिवाय सात आत्माएँ होती हैं। छठे गुणस्थान से लेकर दसवें गुणस्थान तक आठ आत्मा और ग्यारहवें से तेरहवें तक कषाय आत्मा के सिवाय सात आत्माएँ होती हैं। चौदहवें गुणस्थान में कषाय आत्मा और योग आत्मा के सिवाय छह आत्माएँ होती हैं।

अथवा

उपयोग द्वार-पहले और तीसरे गुणस्थान में छह उपयोग हो सकते हैं - तीन अज्ञान-मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान और तीन दर्शन-चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन। दूसरे, चौथे और पाँचवें गुणस्थान में छह उपयोग होते हैं - 3 ज्ञान, 3 दर्शन। छठे से बारहवें तक सात उपयोग होते हैं - पूर्वोक्त छह और एक मनःपर्याय ज्ञान, लेकिन 10 वें गुणस्थान में 4 ज्ञान के ही उपयोग होते हैं। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में केवलज्ञान और केवलदर्शन- ये दो ही उपयोग होते हैं।

(e) एक भव की अपेक्षा गुणस्थानों में आकर्ष लिखिए।

पहले गुणस्थान का तीसरा भंग (सादि सपर्यवसित), तीसरा, चौथा और पाँचवाँ गुणस्थान जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार प्राप्त हो सकता है। दूसरा गुणस्थान जघन्य एक बार,

उत्कृष्ट दो बार प्राप्त हो सकता है। छठा और सातवाँ गुणस्थान मिलाकर जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व 100 बार, आठवाँ, नववाँ, दसवाँ गुणस्थान जघन्य 1 बार, उत्कृष्ट 4 बार, ग्यारहवाँ गुणस्थान जघन्य 1 बार, उत्कृष्ट 2 बार, बारहवाँ, तेरहवाँ, चौदहवाँ गुणस्थान एक बार ही प्राप्त होता है।

(f) क्षयोपशम का अर्थ लिखिए।

जिसमें प्रदेशोदय तो हो, किन्तु विपाकोदय न हो। वर्तमान काल में सर्व घाती स्पर्धकों का देशघाती स्पर्धक के रूप में उदय आकर क्षय होना तथा आगामी काल की अपेक्षा उन्हीं का सदवस्था रूप का उपशम होना और देशघाती स्पर्धकों का उदय होना, क्षयोपशम कहलाता है।

(g) सप्तभंगी के अधिक व्यावहारिक भंगों को लिखिए।

1. स्याद् अस्ति- किसी की अपेक्षा से है।
2. स्याद् नास्ति- किसी की अपेक्षा से नहीं है।
3. स्याद् अस्ति-नास्ति- किसी अपेक्षा से है, किसी अपेक्षा से नहीं है।
4. स्याद् अपक्तव्य- है भी, नहीं भी, पर युगपत् कहा नहीं जा सकता।

(h) अनेकान्त दृष्टि के भगवती सूत्र के उदाहरणों में से कोई एक उदाहरण लिखिए।

उ. नोट-इनमें से कोई एक

1. लोक शाश्वत है या अशाश्वत?जमालि द्वारा पूछे गए इस प्रश्न के उत्तर में भगवान महावीर ने कहा-लोक शाश्वत भी है और अशाश्वत भी। त्रिकाल में एक भी ऐसा समय नहीं मिल सकता जब लोक न हो। अतः लोक शाश्वत है, पर लोक सदैव एक सा नहीं रहता, कालक्रम से उसमें उन्नति-अवनति होती रहती है। अतः वह अनित्य और परिवर्तनशील होने के कारण अशाश्वत भी है।

2. लोक सान्त है या अनन्त ?परिव्राजक स्कन्दक के इस प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान् महावीर ने कहा - द्रव्य की अपेक्षा से लोक एक और सान्त है, क्षेत्र की अपेक्षा से लोक असंख्यात कोटा-कोटि योजन विस्तार और असंख्यात कोटा-कोटि योजन- परिधि वाला है, अतः सान्त है। काल की दृष्टि से कोई काल ऐसा नहीं, जब लोक न हो। अतः लोक अनन्त है।

3. जीव शाश्वत है या अशाश्वत?इन्द्रभूति गौतम के इस प्रश्न के उत्तर में प्रभु महावीर ने कहा कि द्रव्यार्थिक दृष्टि से जीव शाश्वत है और पर्यायार्थिक दृष्टि से जीव अशाश्वत है।

4.तत्त्वज्ञा श्राविका जयन्ती के यह पूछने पर कि जीव का सोना अच्छा है या जागना? इसके उत्तर में भगवान् महावीर ने फरमाया - जो जीव अधार्मिक वृत्ति के हैं, उनका सोते रहना अच्छा है। क्योंकि शयन अवस्था में वे किसी को दुःख नहीं देंगे, अधार्मिक क्रियाएँ नहीं करेंगे और जो जीव धार्मिक वृत्ति वाले हैं उनका जागना अच्छा है। क्योंकि वे जागृत अवस्था में जीवों को सुःख देंगे, धर्म-जागरणा में लगे रहेंगे।

(i) एकलठाण प्रत्याख्यान सम्बन्धी ध्यान रखने योग्य बातें लिखिए।

उ. 1. इसमें जिस आसन से भोजन करने बैठें उसी आसन से बैठे रहना आवश्यक है। हाथ जिससे भोजन करना है और मुँह के अलावा शेष अंग हिलना नहीं है।

2. इसमें एक बार ही एक स्थान पर बैठकर भोजन व धौवन या गर्म पानी ग्रहण करना होता है।

(j) निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।

समावण्णाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा, कट्टु, पुढोविस्संभिया पया।।

ज्ञानावरणीय आदि अनेक प्रकार के कर्म (संचित) करके अनेक (हीन-मध्यम-उत्तम) गोत्रों (नामों) वाली क्षत्रिय आदि जातियों (अथवा जन्मों) में एक-एक योनि में पृथक-पृथक रूप से (अर्थात् कभी किसी योनि में, कभी किसी में) उत्पन्न होकर संसारी जीव सारे विश्व को भर देते हैं, अर्थात्- वे संसार में सर्वत्र उत्पन्न होते हैं। बाल के अग्रभाग जितना भी कोई प्रदेश ऐसा नहीं है, जहाँ जीव ने

जन्म-मरण न किया हो।

(k) निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।

असंखयं जीवियं मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं।
एवं वियाणाहि जणे पमत्ते, कण्णू वि हिंसा अजया गहिंति।।

जीवन असंस्कृत इसलिये है कि आयुष्य के कण क्षण-क्षण में समाप्त होते जा रहे हैं। इस प्रतिक्षण टूटते हुए जीवन को सैकड़ो इन्द्र देव, यहाँ तक कि भगवान भी न जोड़ सकते हैं, और न ही बढ़ा सकते हैं। अतः क्षण का भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

(l) सुप्त शब्द के तीन अर्थ लिखिए।

1. जो द्रव्यतः सोया हुआ हो। 2. भावतः धर्माचरण के प्रति अजाग्रत हो।
3. जो प्रमादी-प्रेयार्थी अज्ञानी हो।

(m) छंदं निरोहण की कोई दो व्याख्या लिखिए।

1. स्वच्छन्दता-निषेध- गुरु के अधीन अपने आग्रह से रहित होकर प्रवृत्ति करने वाला संक्लेश रहित होने से कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है।

2. छन्दसा-गुरु के अभिप्राय से आहारादि परिहाररूप निरोध करने से मुक्ति की प्राप्ति हो जाती है।

3. अथवा छन्द का अर्थ वेद या आगम है, इस दृष्टि से छन्दसा-आगमविहित आज्ञानुसार, इन्द्रियादि निग्रहात्मक छन्द निरोध करने से मोक्ष प्राप्त होता है।

(n) निम्न सूत्रों के हिन्दी अर्थ लिखिए-

1. तदिन्द्रियानिन्द्रिय निमित्तम्।
2. यथोक्त निमित्त षड्विकल्पः शेषाणाम्।
3. द्विनवाष्टादशैकविंशति त्रिभेदा यथाक्रमम्।
4. निरूपभोगमन्त्यम्।

उ. वह (मतिज्ञान) इन्द्रिय और अनिन्द्रिय (मन) के निमित्त से होता है।
क्षयोपशमजन्य अवधिज्ञान छह प्रकार का है, जो तिर्यंच और मनुष्यों को होता है।
पाँच भावों के अनुक्रम से दो, नौ, अठारह, इक्कीस और तीन भेद हैं।
अन्तिम अर्थात् कार्मण शरीर उपभोग (सुख-दुःखादि के अनुभव) से रहित है।

कक्षा : नवमीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर पूर्वार्द्ध (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) चतुरंगीय उत्तराध्ययन सूत्र का कौनसा अध्ययन है-
(क) दूसरा (ख) तीसरा
(ग) चौथा (घ) पाँचवाँ (ख)

(b) धर्म श्रवण की दुर्लभता किस गाथा में बताई गई है-
(क) छठी (ख) सातवीं
(ग) आठवीं (घ) नवमी (ग)

(c) जिनशासन में स्थविर निह्नव द्वारा कौनसा सिद्धान्त/नियम प्रवर्तित हुआ-
(क) अकृतवाद (ख) अव्यक्तवाद
(ग) द्वैक्रियवाद (घ) त्रैराशिकवाद (घ)

(d) ''समाययंती'' का अर्थ है-
(क) कामना (ख) पापकर्म
(ग) छेदना (घ) असंयमी (बोनस अंक देवें)

(e) ''धन त्राणदायक है'' इस मिथ्या मान्यता का खण्डन किस गाथा में किया गया है-
(क) दूसरी (ख) तीसरी
(ग) चौथी (घ) पाँचवीं (घ)

(f) तत्त्वार्थ सूत्र में कुल कितने सूत्र हैं-
(क) 320 (ख) 322
(ग) 344 (घ) 350 (ग)

(g) 'मतिज्ञान' का एकार्थक शब्द नहीं है-
(क) इन्द्रिय (ख) स्मृति
(ग) संज्ञा (घ) अभिनिबोध (क)

(h) 'मतिज्ञान' के कुल कितने भेद हैं-
(क) 28 (ख) 340
(ग) 336 (घ) 24 (ख)

(i) बाईस परीषह कितने कर्मों के उदय से होते हैं-
(क) आठ (ख) सात
(ग) चार (घ) पाँच (ग)

(j) आत्म-गुणों को पुष्ट करने के कारण यह व्रत..... कहलाता है-
(क) सामायिक व्रत (ख) उपवास व्रत
(ग) दयाव्रत (घ) पौषध व्रत (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) विकल्प रहित होकर एकमात्र मुक्ति की आराधना करने वालों की ही शुद्धि होती है। (हाँ)
(b) जीवन संस्कृत है, इसलिए आयुष्य के कण क्षण-क्षण समाप्त होते जा रहे हैं। (नहीं)
(c) पापकर्म से उपार्जित धन त्राणदायक होता है। (नहीं)
(d) कवचधारी घोड़ा स्वच्छन्द रहकर युद्ध में विजय प्राप्त करता है। (नहीं)
(e) तत्त्वार्थ सूत्र के सभी सूत्र संस्कृत भाषा में नहीं है। (नहीं)
(f) उत्तराध्ययन सूत्र के 28वें अध्ययन में मोक्ष के तीन साधन बताये हैं। (नहीं)
(g) सभी पापों का तीन करण, तीन योग से त्याग करना सम्यक्चारित्र कहलाता है। (हाँ)
(h) सातों प्रकृतियों का हमेशा के लिए पूर्ण क्षय हो, ऐसा आत्मिक श्रद्धान क्षायिक सम्यग्दर्शन है। (हाँ)

(i) 27 प्रकृतियों का उपशम करने से जीव को ग्यारहवाँ गुणस्थान प्राप्त होता है। (नहीं)

(j) 8 से 11वें गुणस्थान की जघन्य स्थिति एक समय की है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1=(10)**

(a)	सराग संयम	(क) उपदेश	देव गति
(b)	श्रेणिक	(ख) महाप्राज्ञ	चारित्र मोहनीय
(c)	दस अंग	(ग) पाँच	महाप्राज्ञ
(d)	भारण्डपक्षी	(घ) चारित्र मोहनीय	अप्रमत्त
(e)	अधिगम	(च) सूक्ष्म सम्पराय	उपदेश
(f)	नय	(छ) अप्रमत्त	अंश
(g)	संज्वलन लोभ	(ज) आत्मा	सूक्ष्म सम्पराय
(h)	बंध	(झ) देव गति	पाँच
(i)	आठ	(य) शुक्ल लेश्या	आत्मा
(j)	13वाँ गुणस्थान	(र) अंश	शुक्ल लेश्या

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a)	औदारिक शरीर पा लेने पर भी मेरा श्रवण करना दुर्लभ है।	जिन प्ररूपित धर्म
(b)	मेरे द्वारा द्वैक्रियवाद मत प्रवर्त्तित हुआ।	गंगाचार्य
(c)	मेरे सर्वथा उच्छेद हो जाने से सिद्ध सदाकाल स्थायी होते हैं।	कर्मबीज
(d)	मुझे सैकड़ों इन्द्र, देव, भगवान भी न तो जोड़ सकते हैं और न ही बढ़ा सकते हैं।	प्रतिक्षण टूटता हुआ जीवन(आयुष्य)
(e)	मेरे कारण जीव ने इस जीवन में अनेक दुःख पाये तथा अगले जन्म में भी भयंकर कष्ट भोगने पड़ेंगे।	प्रमाद
(f)	मैं साधना के लिए विध्नकारक नहीं हूँ।	गुरु या संघ आदि समूह
(g)	मेरे कारण से जीवादि तत्त्वों को अपनी मनोकल्पना से जैसा चाहे वैसा मान लिया जाता है।	अज्ञान
(h)	मुझ में सात बोलों का बंध नहीं होता।	अविरति सम्यग्दृष्टि गुण./ चौथा गुणस्थान
(i)	मैं अनुभूति में आने वाला उदय हूँ।	विपाकोदय
(j)	मैं वह द्वार हूँ, जिसमें पहले से दसवें तक आठों कर्मों का उदय होता है।	उदय द्वार

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2=(24)**

(a) श्रद्धा की परमदुर्लभता का कोई एक कारण संक्षेप में लिखिए।

उ. 1. जो मिथ्यादृष्टि जीव है, वह गुरु आदि द्वारा उपदिष्ट प्रवचन पर 'यह ऐसा ही है,' अथवा 'वही सत्य और निःशंक है, जो जिन भगवन्तों द्वारा प्ररूपित है'(इस प्रकार से श्रद्धा नहीं करता।)

2. कदाचित् दूसरे के द्वारा उपदिष्ट या अनुपदिष्ट पर श्रद्धा करता है, तो भी वह असद्भूतभाव पर करता है।

3.सम्यग्दृष्टि जीव सुगुरु के द्वारा उपदष्टि प्रवचन पर श्रद्धा तो करता है, किन्तु कभी-कभी कई सम्यग्दृष्टि अनाभोग- (अज्ञान) वश, या गुरूजनों के प्रति नियोग (विश्वास) वश अतत्त्व को भी तत्त्व मान बैठते हैं।

4.कई सम्यग्दृष्टि इतने सरल और भोले होते हैं कि स्वयं आगमानुसारी बुद्धि वाले होने पर भी गुरु के मिथ्या उपदेश से अन्यथा भी समझ बैठते हैं। जैसे- जमालि आदि निह्नवों के शिष्य स्वयं आगमानुसारी बुद्धि वाले होते हुए भी अपने-अपने गुरुओं के प्रति भक्तिवश विपरीत अर्थ को भी सत्य मान बैठे थे।

(नोटः उपर्युक्त में से कोई एक कारण)

(b) बोधि का अर्थ लिखिए।

उ. सम्यक्त्व या सम्यक् श्रद्धा

(c) प्रमाद का अर्थ क्या है ?

उ. आत्म-विस्मृति, शरीर, इंद्रियाँ, धन, परिवार आदि साधनों में आसक्त होकर अपने आत्म-स्वरूप को विस्मृत कर देना तथा धर्म कार्य के प्रति अनुत्साह।

(d) भाव निद्रा के अन्तर्गत क्या-क्या आते हैं ?

उ. अज्ञान, अन्ध विश्वास, मिथ्यादृष्टि, मिथ्या मान्यताएँ, भ्रांति आदि।

(e) काल को घोर कहा गया है। क्यों ?

उ. मुहूर्त्त– शब्द उपलक्षण से समस्त काल का सूचक है। प्राणी की आयु प्रतिक्षण क्षीण होती जाती है, अतः प्राणी की आयु अल्प होने से तथा मृत्यु का काल अनियमित होने से 'काल' को 'घोर' कहा गया है।

(f) 'छंदं निरोहण उवइ मोक्खं'' का अर्थ लिखिए।

उ. स्वेच्छाचार को रोककर, गुरु के अधीन रहकर शिक्षा प्राप्त और संयमकवचधारी मुनि भी शीघ्र ही संसार से मुक्त (पार) हो जाता है।

(g) जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंतिमहिंसयं का अर्थ लिखिए।

उ. जिसे सुनकर व्यक्ति में बारह प्रकार के तप, क्षमा आदि दश धर्म और अहिंसकता (उपलक्षण से शेष व्रतों–महाव्रतों) को ग्रहण करने की प्रेरणा जगती है।

(h) शब्द नय के तीन भेद कौन-कौन से हैं ?

उ. 1. साम्प्रत 2. समभिरूढ 3. एवंभूत नय

(i) लक्षण किसे कहते हैं ?

उ. जिसके द्वारा लक्ष्य को पहचाना जा सके अर्थात् जिसके द्वारा किसी भी वस्तु को अन्य वस्तुओं से अलग करके पहचान सकें उसे लक्षण कहते हैं।

(j) 10वें एवं 12वें गुणस्थान में कितने कर्मों की निर्जरा होती है ?

उ. 10वें गुणस्थान में आठ कर्मों की तथा बारहवें गुणस्थान में मोहनीय के सिवाय 7 कर्मों की निर्जरा होती है।

(k) भगवान महावीर ने वस्तु के अनन्त धर्मात्मकता का क्या कारण बताया है ?

उ. 'उप्पन्नेइ वा, विगमेई वा, धुवेइ वा' द्रव्य, उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से युक्त है।

(l) 'अनेकान्त' का अर्थ लिखिए।

उ. अनेकान्त का शाब्दिक अर्थ है-अनेक धर्म, अनेक गुण। किसी भी वस्तु या पदार्थ को अनेक दृष्टियों से, अनेक सन्दर्भों से, अनेक अवस्थाओं से देख-समझ कर उसमें निहित अनेक विशेषताओं को हृदयंगम करना अनेकान्त दर्शन है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 12x3 = (36)

(a) निम्न गाथा का अर्थ लिखिए-

सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो शुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घय सित्तव्व पावए।।

उ. जो ऋजुभूत होता है, उसकी शुद्धि होती है, जो शुद्ध होता है, उसमें धर्म ठहरता (स्थिर रहता) है। जिसमें धर्म है, वह घृत से सिक्त (सींची हुई) अग्नि की तरह, परम निर्वाण को प्राप्त करता है।

(b) निम्न गाथा का भावार्थ लिखिए-

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं, तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया महेसी, अप्पाणुरक्खी चरेऽप्पमत्तो।।

उ. कोई भी व्यक्ति आत्म-विवेक झटपट नहीं प्राप्त कर सकता, इसलिए अभी से ही कामभोगों का परित्याग करके मोक्षमार्ग के लिए समुद्यत होकर लोक (प्राणिजगत) का समत्वभाव से सम्यक्रूप से

विचार करो। हे आत्मगुणरक्षक महर्षि या मोक्ष के इच्छुक साधक! समतापूर्वक अप्रमत्तरूप से विचरण करते रहो।

(c) निम्न शब्दों का हिन्दी में अर्थ लिखिए-

उ. 1. सव्वट्ठेसु समस्त इन्द्रिय विषयों का उपयोग करने पर।
2. नेआउयं न्यायसंगत।
3. रोयमाणा संयम में रूचि रखते हुए।
4. जरोवणीयस्स वृद्धावस्था के द्वारा मृत्यु के निकट पहुँचा दिया जाता है।
5. दीवप्पणट्ठेव अन्धेरी गुफा में जिसका दीपक बुझ गया हो।
6. अप्पाणुरक्खी कुगति से आत्मा को बचाने वाले।

(d) नैगम नय किसे कहते हैं ?

उ. जिस प्रकार नगर में जाने के अनेक मार्ग होते हैं, उसी प्रकार वस्तु तत्त्व को समझने की अनेक विधियों वाली शैली को "नैगम नय" कह सकते हैं। यह नय पदार्थ को सामान्य-विशेष एवं उभयात्मक मानता है। एक अंश उत्पन्न होते ही सम्पूर्ण वस्तु का ग्रहण कर लेता है। जो विचार लौकिक रूढ़ि अथवा लौकिक संस्कार के अनुसरण से पैदा होता है, उसे भी नैगम नय कहते हैं।

(e) निम्न सूत्रों का अर्थ लिखिए-

उ. 1. विग्रह गतौ कर्मयोगः- विग्रहगति में कार्मण काय योग ही होता है।
2. अनुश्रेणिगतिः- गति, श्रेणि (सरल रेखा) के अनुसार होती है।
3. अविग्रहा जीवस्यः- जीव (मोक्ष में जाने वाला)की गति विग्रह रहित ही होती है।

(f) विसंयोजना का अर्थ लिखिए।

उ. जिसमें किसी भी प्रकार का उदय न हो, कर्म सता में भी न हो, किन्तु कारण (मिथ्यात्व) उपस्थित होने पर जिसका पुनः बन्ध व उदय हो सके अर्थात् अस्थायी क्षय। विसंयोजना मात्र अनन्तानुबंधी चौक की ही होती है।

(g) गुणस्थान में उपयोग द्वार लिखिए।

उ. पहले और तीसरे गुणस्थान में छह उपयोग हो सकते हैं – तीन अज्ञान–मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान और तीन दर्शन–चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन। दूसरे, चौथे और पाँचवें गुणस्थान में छह उपयोग होते हैं – 3 ज्ञान, 3 दर्शन। छठे से बारहवें तक सात उपयोग होते हैं – पूर्वोक्त छह और एक मनःपर्याय ज्ञान, लेकिन 10 वें गुणस्थान में 4 ज्ञान के ही उपयोग होते हैं। तेरहवें और चौदहवें गुणस्थान में केवलज्ञान और केवलदर्शन– ये दो ही उपयोग होते हैं।

(h) स्याद्वाद का स्वरूप संक्षेप में समझाइये।

उ. 'स्याद्वाद' दो शब्दों से मिलकर बना है – 'स्यात्' और 'वाद'। 'स्यात्' का अर्थ – 'शायद' 'सम्भवतः', 'कदाचित्' आदि करके कई लोगों ने 'स्याद्वाद' को 'संशयवाद', 'सम्भावनावाद' 'अनिश्चयवाद', आदि समझने की भूल की है। पर 'स्यात' वस्तुतः तिङ्.न्त शब्द नहीं है। यह निपात अव्यय है। इसका विशिष्ट अर्थ है – कंथचित्, विवक्षा, अपेक्षा। वाद का अर्थ है – वाणी, वचन, कथन।

(i) भगवान महावीर ने सूत्रकृतांग सूत्र में 'अनेकान्त' के बारे में क्या कहा ?

उ. भगवान् महावीर ने 'सूत्रकृतांग' में स्पष्ट कहा है-

"सयं सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं।
जे उ तत्थ विउस्सन्ति, संसारे ते विउस्सिया॥"

अर्थात् जो आग्रही हैं, जो अपने–अपने सिद्धान्त की प्रशंसा करते हैं, दूसरे की निन्दा करने में तत्पर हैं – ऐसा करने में पाण्डित्त्य समझते हैं, वे इस संसार में चक्कर खाते रहते हैं।

(j) पच्चक्खाण का अर्थ लिखिए। पच्चक्खाण क्यों किया जाता है, कोई एक कारण लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई एक कारण-

1. निराकुलता एवं शान्ति के लिए– इच्छाएँ आकाश के सदृश अनन्त हैं। वे आकुलता की जनक हैं।

उनकी पूर्ति संभव नहीं। इन्हें नियंत्रित करने का एक ही उपाय है प्रत्याख्यान या त्याग। क्योंकि भोग से नहीं त्याग से ही संतोष और शांति संभव है।

2. स्वास्थ्य लाभ– भोग्य पदार्थों आदि की सीमा निश्चित करने या उनके त्याग से इन्द्रिय संयम/संतोष द्वारा व्यक्ति को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है। क्रोधादि के त्याग से वह मानसिक एवं आत्मिक शांति–लाभ प्राप्त करता है। इस प्रकार त्याग पच्चक्खाण को पूर्ण स्वस्थता प्राप्त करने का मूल मंत्र बताया है।

3. तृष्णा विजय एवं आसक्ति घटाने हेतु– उत्तराध्ययन–सूत्र अध्ययन 29 में बताया गया कि प्रत्याख्यान से आस्रवद्वार (पापद्वार) बन्द किए जाते हैं। इससे इच्छानिरोध होने से व्यक्ति तृष्णा पर नियंत्रण/विजय करके आसक्ति को घटाता है। आसक्ति को घटाकर वह शांत एवं निराकुल बनता है।

4. संकल्प दृढ़ता में सहायक– योगशास्त्र में आचार्य हेमचंद्र लिखते हैं– छोटे–बड़े प्रत्याख्यान लेकर पालन करने से व्यक्ति में संकल्प की दृढ़ता की वृत्ति का विकास होता है और इस प्रकार वह कठोरातिकठोर संकल्प करके भी उनका पालन करने योग्य बन जाता है।

5. सूत्रकृतांग 2/4 में अप्रत्याख्यानी आत्मा को एकांत बाल बताया, अज्ञानी बताया क्योंकि हिंसादि पापों का ज्ञान न होने से तथा अज्ञान से आवृत्त होने के कारण वह पाप क्रिया का कर्ता कहलाता है।

6. प्रत्याख्यान एक तप– इच्छाओं का स्वाधीनता पूर्वक निरोध करने से प्रत्याख्यान एक तप है और तप मुक्ति का द्वार है।

(k) **निम्न के अर्थ लिखिए-**

उ. **1.** पच्छन्नकालेणं– पौरसी आदि का समय ज्ञात न होने से अथवा बादलों, आँधी, कुहरा आदि के कारण सूर्य नहीं दिखाई दे, अथवा नेत्र विकार आदि के कारण सूर्य या घड़ी आदि स्पष्ट दिखाई न दें, जिससे पौरसी पूर्ण होने के भ्रम से पार लेना।

2. साहुवयणेणं– साधु या बड़े व्यक्ति के कहने से पौरसी आदि पार लेना अथवा जानकार पुरुष के सुनने, देखने, गिनने में भूल–चूक हो जाने से कुछ समय पूर्व पच्चक्खाण पार ले।

3. लेवालेवेणं– घी आदि से लिप्त हो या या बाद में उसे पौंछ लिया हो, फिर भी उसमें कुछ अंश रहता है, उसका आगार।

4. श्रद्धान विशुद्धि– पंच महाव्रत, बारह व्रत आदि रूप जो प्रत्याख्यान है, उसका श्रद्धा के साथ पालन करना।

(l) **पौषध किसे कहते हैं ? पौषध कितने प्रकार के हैं ? उनके नाम लिखिए।**

उ. आत्मगुणों को पुष्ट करने के कारण वह व्रत पौषधव्रत कहलाता है। 1. अष्टप्रहरी पौषध सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक किया जाता है। 2. ग्यारहवाँ पौषध कम से कम 5 प्रहर का किया जाता है। दिन का पिछला प्रहर एवं रात्रि के 4 प्रहर मिलाकर 5 प्रहर गिने जाते हैं।